Core-14 Sem-VI

Q. उत्तर-आधुनिकवाद के मूल दृष्टान्तों की रूपरेखा बताइए।

पिछले लगभग दो दशकों में सभी सामाजिक विज्ञानों में उत्तर आधुनिकवाद को प्रभावी सैद्धान्तिक विकास के रूप में देखा गया है। राजनीति विज्ञान के उत्तर-आधुनिकी उपागम की परिभाषा कर सकना सरल कार्य नहीं है। चाहे अनेक विद्वान अपने को उत्तर आधुनिकवादी कहते हो पर समस्या यह है कि उचित परिभाषा किस प्रकार की जाय। एक अत्यंत प्रचलित और लोकप्रिय परिभाषा ल्योतार्द (Lyotard) ने प्रस्तुत की थी - "अति सरल भाषा में, मैं उत्तर आधुनिक की परिभाषा इस प्रकार करता हूँ कि इसका झुकाव मेटा-नैरेटिव को अस्वीकार करने पर है। मैटा नैरेटिव यानि (महान वृतान्त)। इस सिद्धान्त में ज्ञान के विषय में दावा करने का आधार उपलब्ध होता है। वास्तव में ल्योतार्द यह कहना चाहता है कि उत्तर आधुनिकवाद का सम्बंध विरचना (deconstruction) से है और यह प्रत्येक ऐसे मानव जीवन में अविश्वास की अभिव्यक्ति है जो किसी सत्य तक पहुँचने का प्रयत्न दावा करता है। यदि सरल भाषा में कहे तो उत्तर-आधुनिकतावादियों को प्रत्येक ऐसे सिद्धांत या उपागम के विषय में संदेह रहता है जो यह मानता है कि सत्य की तलाश कर सकना संभव है। इसलिए उत्तर आधुनिकतावादी मार्क्सवाद और महिलावाद दोनों को संदेह की दृष्टि से देखते हैं क्योंकि इन दोनों का ही यह विश्वास है कि उस आधार का निर्धारण संभव है जिस पर नैतिक न्याय और सत्य को पाया जा सके।

डेविड हारवे ने अपनी कृति कण्डीशन ऑफ पोस्टमार्डनिटी में उत्तर-आधुनिकता के लक्षण स्पष्ट करते है, यह है-

1. उत्तर आधुनिकता एक सांस्कृतिक मॉडल है इसकी अभिव्यक्ति जीवन की विभिन्न शैलियों में अर्थात कला, साहित्य दर्शन आदि में देखने को मिलती है।
2. यह एक ऐसी संस्कृति है जिसमें बहुलता है - जैसे शक्ति के कई स्त्रोत है।
3. उत्तर आधुनिकता की प्रकृति विखण्डन की है। - यह समानता की अपेक्षा विविधता को स्वीकार करती है।

Bhanupriya
28.3.20

5. उत्तर आधुनिकता प्रघटनाओं को ~~स्थानीय~~ स्थानीय स्तर पर देखती है। उनका विश्लेषण
भी स्थानीय स्तर के कारकों द्वारा किया जाता है। इसके विश्लेषण, उदाहरण
के लिये स्थानीय राजनीति के शक्ति सम्बन्धों, स्थानीय संदर्भ में ही देखते
हैं। इसका केन्द्र स्थानीय वृतान्त है। भारत में पिछले कोई एक
दशक से स्थानीयता उभर कर बाहर आ रही है। अब लोग स्थानीय स्तर
पर अपनी पहचान बनाना चाहते हैं। यह इसी कारण है कि हमारे यहां क्षेत्रवाद
बढ़ रहा है। क्षेत्रिय तीर्थ प्रमुख हो रहे हैं, क्षेत्रीय नेता व्यापक बन रहे हैं।
आदिवासी अपनी संस्कृति को पुनः जीवित करना चाहते हैं। राजनीति
वस्तुतः स्थानीय राजनीति हो गई है. संघर्ष स्थानीय हो गये हैं। यह
स्थानीय वृतान्तों का सवाल है, इस देश में
लगता है कि यहां तक स्थानीय वृतान्तों का
उत्तर – आधुनिकता का प्रवेश हो गया है।

6. उत्तर आधुनिकतावाद में दो महत्वपूर्ण प्रकरण जिनका विवेचन देवेराक
ने किया उनका सम्बन्ध शक्ति-ज्ञान सम्बन्धों से है। शक्ति-ज्ञान
सम्बन्ध पर उत्तर आधुनिकी विचारक फाइकॉल्ट (Foucault) के विचारों
का बहुत प्रभाव पड़ा। उसकी रचना में मूल विषय शक्ति-ज्ञान
सम्बन्ध का है। रेशनल कहे जाने वाले सिद्धान्तकारों के विपरीत
फाइकॉल्ट का विश्वास है कि शक्ति और ज्ञान में घनिष्ठ सम्बन्ध है।
वह इस तर्क पर विश्वास नहीं करता है कि ज्ञान, शक्ति के कार्यकलापों
से स्वतंत्र नहीं होता। उसका प्रमुख तर्क है कि शक्ति के द्वारा ही
ज्ञान की उत्पत्ति होती है। उसके अनुसार सब प्रकार की शक्ति को
ज्ञान की आवश्यकता होती है तथा ज्ञान, "शक्ति सम्बन्धों" पर भरोसा
करता है तथा उसको बल प्रदान करता है। अतः शक्ति के अभाव
में सत्य सम्भव ही नहीं है। उत्तर आधुनिकवादियों के अनुसार सत्य
सामाजिक व्यवस्था के बाहर नहीं हो सकता परन्तु उसी का अंश होता है।
सत्य जैसी कोई वस्तु है ही नहीं केवल सत्य की सत्ता हो सकती है।
सामाजिक जगत के विषय में दिए गये वक्तव्य केवल किसी वचन
विशेष के सन्दर्भ में ही सत्य होते हैं। देरिदा के तर्क के अनुसार
संसार एक पुस्तक की भांति है इसको सीधे सीधे नहीं समझा जा सकता
परन्तु इसकी व्याख्या करनी होती है।

Bhagyashree
28.3.20